दैनिक भास्कर 20/9/14

गले की फांस बने 750 खरगोश

पर्यावरण मंत्रालय दिल्ली द्वारा रिसर्च करने व प्रजनन प्रक्रिया पर प्रतिबंध लगाने से बढ़ी परेशानी, अविका नगर में दाना-पानी और देखभाल पर खर्च हो रहे हैं ढाई हजार रुपए रोजाना

महेश शर्मा | मालपुरा

पर्यावरण मंत्रालय दिल्ली की ओर से खरगोश पर रिसर्च करने व प्रजनन प्रक्रिया पर प्रतिबंध लगाने से केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में पूर्व प्रजनित व विकसित करीब 750 खरगोश संस्थान प्रशासन के गले की फांस बने हुए हैं। खास बात यह है कि कृत्रिम विधियों से पैदा किए गए ये विभिन्न प्रजातियों के खरगोश जंगल में भी नहीं छोड़े जा सकते, क्योंकि ये दौड़ते नहीं हैं।

पालतू किस्म के खरगोशों को केंद्र सरकार के प्रजनन व रिसर्च बंद करने आदेश के बाद बेचने के अलावा अविकानगर संस्थान प्रबंधन के पास कोई और रास्ता नहीं रहा है। संस्थान प्रबंधन ने केंद्र सरकार के आदेशों की अनुपालना में रिसर्च व प्रजनन तो बंद कर दिया, लेकिन मौजूदा खरगोशों को जिंदा रखने के लिए दाने-पानी व देखभाल पर करीब दो से ढाई हजार रुपए रोजाना खर्च करना पड़ रहा है। घरेलू उपयोग की नस्ल के अत्यंत सुंदर लगने वाले ब्लैकजैट व सोवियत चिंचिला तथा ग्रेज्याइंट खरगोश यहां बड़ी संख्या में हैं।

मालपुरा. केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान की इकाई में पल रहे हैं खरगोश।

उधर, खरगोश पर रिसर्च व उन्नत नस्लों के प्रजनन पर रोक लगाने से खरगोश पालन के कारोबार में लगे कई पालकों को झटका लगा है। खरगोश पालकर आजीविका चला रहे ब्यावर व नसीराबाद, झालावाड़ व मालपुरा के आसपास के अनेक पालकों में रोजगार बंद होने से चिंता बढ़ने लगी है।

उल्लेखनीय है कि केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान ने देश-प्रदेश में खरगोश के मांस की बढ़ती आवश्यकता को देखते हुए उन्नत नस्ल के अधिक मांस व अधिक ऊन देने वाले खरगोश की नस्लें विकसित की थीं। संस्थान के खरगोश देश-प्रदेश सहित विदेशों में लोकप्रिय थे तथा कई लोगों को इससे रोजगार मिल रहा था।

ये दौड़ नहीं सकते

केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर के निदेशक डॉ. एस.एम.के. नकवी का कहना है कि केंद्र सरकार के आदेशानुसार व भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के निर्देशानुसार संस्थान में खरगोश पर रिसर्च व प्रजनन बंद कर दिया गया है। मौजूद खरगोशों को बेचा जा रहा है। खरगोश यूनिट के भवन व कूलर पंखे व कर्मचारी, ठेकेदार तथा सैकड़ों पिंजरे बेकार हो गए। खरगोशों के दाना-पानी पर रोजाना दो हजार रुपए खर्च हो रहे हैं। ये दौड़ नहीं पाते इसलिए जंगल में भी नहीं छोड़ सकते।

20/9/2014